International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 68-69

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 68-69
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-03-2018
Accepted: 14-04-2018

डॉ. मनुभाई एस. प्रजापति
संस्कृत विभाग कला, विज्ञान और वाणिज्य कॉलेज, पिलवाई, विजापुर, जिला मेहसाना, एचएनजी यूनिवर्सिटी, पाटन, गुजरात, भारत

Correspondence
डॉ. मनुभाई एस. प्रजापति
संस्कृत विभाग कला, विज्ञान और वाणिज्य कॉलेज, पिलवाई, विजापुर, जिला मेहसाना, एचएनजी यूनिवर्सिटी, पाटन, गुजरात, भारत

भासकृत महाभारत आधारित रुपकों में रसवृत्ति अध्ययन

डॉ. मनुभाई एस. प्रजापति

भारतीय काव्य –शास्त्रियों ने रूपक के भेदक तत्व के रूप में वस्तु, नेता और रस को प्रतिष्ठित किया है |[1] कोई भी रूपक इन तीन तत्वों के कलात्मक समन्वय का ही परिणाम होता है | वस्तु एवं नेता नाटक को स्थापित करते हैं, परन्तु रस के अभाव में वह मात्र चित्र काव्य की ही उपाधि प्राप्त कर पाता है | यही कारण है कि प्रायः सभी वरेण्य आचार्यो ने एक स्वर से रस की सर्वातिशायितास्वीकार की है |

भरत ने विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव इन तीन मूलभूत तत्वों को रस-सामग्री के रूप में स्वीकार किया है |[2]

अभिनवगुप्त ने तो यही लिखा की – एतादुपसंहरति: तस्मादिति | नात्यात्समुदायरुपाद्रसाः | यदि वा नाट्यमेव रस | रस समुदायो हि नाट्यम् | नाट्य एव च रसाः | काव्ये अपि नाट्यमान एव रसः | काव्यार्थ विषये हि प्रत्यक्षकल्पसंवेदनोदये रसोदये इत्युपाध्यायाः |[3]

आचार्य भरत ने तो रस तत्व की सर्वोत्कृष्टता का स्पष्ट शब्दों में उद्घोष किया – "न हि रसा दुते कश्चिदर्थ: प्रवर्तते" [4]

विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न महाकवि भास ने महाभारत को आधार बनाकर छ सफल नाट्य कृतियों का प्रणयन किया है | ये कृतियों हैं – (१) मध्यमव्यायोग (२) दूतवाक्य (३) दूतघटोत्कच (४) कर्णभार (५) ऊरुभंग (६) पंचरात्र

मध्यमव्यायोग का मुख्य रस वीर है | घटोत्कच एवं भीम वीर रस के स्थायी भाव उत्साह के आश्रय हैं | घटोत्कच के हृदय में अपनी माता के भोजनार्थ मनुष्य लाने के लिए तथा भीम में मध्यम ब्राह्मणपुत्र की रक्षा के लिए अदम्य उत्साह विद्यमान है | घटोत्कच, मध्यम ब्राह्मण पुत्र तथा भीम आलम्बन विभाव हैं | एकान्त गहन जंगल, विशाल पेड़ तथा पर्वत आदि उद्दीपन विभाव हैं | ब्राह्मण परिवार का डर से कांपते हुए भागने का प्रयास, घटोत्कच का उन्हें आश्वस्त करते हुए रोकना, ब्राह्मण द्वारा रक्षा के लिए निवेदन करना, ब्राह्मण परिवार में प्राणोत्सर्ग के लिए स्पर्धा होना, भीम तथा घटोत्कच का नियुद्ध आदि अनुभाव हैं | स्तम्भ, वैवर्ण्य, वेपथु, अश्रु धृति, दैन्य, उग्रता, अमर्ष, गर्व, स्मृति, मोह, आवेग, विषाद आदि व्यभिचारी भाव हैं | भीम तथा घटोत्कच के चित्रण, उनके संवाद एवं संघर्ष से वीररस का संचार होता है |

वीररस के अतिरिक्त इसमें भयानक, रौद्र, अद्भुत तथा करुण नामक रसों की भी अभिव्यंजना होती है | नाटक का प्रारम्भ भयानक वातावरण में होता है | घटोत्कच के रौद्ररूप को देखकर ब्राह्मण परिवार में भय का संचार होता है |[5] भीम तथा घटोत्कच के उत्तेजनात्मक संवाद से रौद्र रस की पुष्टि होती है | घटोत्कच द्वारा रखे गये प्रस्ताव के लिए ब्राह्मण परिवार के सदस्यों का आत्मसमर्पण भाव दर्शक को बरबस करुणा-भिभूत कर देता है | भीम का आकस्मिक आगमन अद्भुत रस का संचार कर वीररस की भूमिका प्रस्तुत करता है | अन्त में भी हिडिम्बा का व्यवहार देखकर सब आश्चर्यचकित रह जाते हैं |

नाटक में भारती तथा सात्वती वृतियां विद्यमान है : स्थापना में भारती वृत्ति तथा भीम और घटोत्कच के संवाद में सात्वती वृत्ति के दर्शन होते हैं |

दूतवाक्य का प्रमुख रस वीर है | श्रीकृष्ण उत्साह स्थायीभाव के आश्रय हैं | दुर्योधन आलम्बन तथा उसकी कटूक्तियाँ उद्दीपन विभाव हैं | श्रीकृष्ण के नम्र एवं कठोर वचन तथा दिव्यास्त्रों का आह्वान आदि अनुभाव हैं | मति, धृति, प्रहर्ष, आवेग आदि व्यभिचारी भाव हैं | नाटक के आरम्भ में ही रणोत्सव के प्राप्त होने पर पाण्डव-सेना के मत्त गजराजों के दन्त मूसलों को उखाड़ फेंकने की दुर्योधन की उत्कट इच्छा में भी उत्साह व्यक्त होता है | अर्जुन की वीरता-वर्णन के प्रसंग में वीर रस की अभिव्यंजना उत्कृष्ट रूप से हुई है | दिव्यास्त्रों तथा गरुड़ के शक्ति वर्णन में भी वीर रस की अभिव्यक्ति होती है |

श्रीकृष्ण तथा दुर्योधन की कटूक्तियों के आदान प्रदान से रौद्र रस की संसृष्टि होती है | चित्रपट में चित्रित भीम, नकुल, सहदेव और अर्जुन की भाव-भंगिमाओं के वर्णन से भी रौद्र रस दीप्त होता है | भगवान् कृष्ण द्वारा दिव्यास्त्रों की अवतारणा से अद्भुत रस का संचार हुआ है | लेकिन नाटक में आद्यन्त उत्साह स्थायी भाव ही वीर रस में परिणत हुआ दृष्टिगोचर होता है, रौद्र एवं अद्भुत रस इसके सहायक हैं |

नाटक में भारती, सात्वती एवं आरभटी वृत्तियां विद्यमान हैं | स्थापना से आरम्भ होकर दुर्योधन तथा कंचुकी के वार्तालाप तक भारती वृत्ति व्याप्त है |

दुर्योधन तथा श्रीकृष्ण के प्रारम्भिक वार्तालाप में सात्वती वृत्ति तथा कटु भाषण में आरभटी वृत्ति की योजना की गई है | अन्त में धृतराष्ट्र के आगमन पर पुनः सात्वती वृत्ति व्याप्त हो जाती है |

दूतघटोत्कच का करुण रस प्रधान है | इसका प्रारम्भ ही शोक एवं विषादयुक्त वातावरण में होता है जो अन्त तक बना रहता है | अभिमन्यु के वध की सूचना मिलने पर धृतराष्ट्र, गान्धारी और उनकी पुत्री दुरूशला के वार्तालाप से करुणरस की संसृष्टि होती है | अभिमन्युवध की सूचना प्राप्त कर उनका स्तब्ध रह जाना, दुरूशला तथा गान्धारी का क्रन्दन, धृतराष्ट्र तथा गान्धारी का अपने कुल नाश को निश्चित मानना, गान्धारी के शोकाभिभूत हृदय का चित्रण आदि प्रसंग करुण रस का संचार करता हैं |

दूतघटोत्कच का करुण रस प्रधान है | इसका प्रारम्भ ही शोक एवं विषादयुक्त वातावरण में होता है जो अन्त तक बना रहता है | अभिमन्यु के वध की सूचना मिलने पर धृतराष्ट्र, गान्धारी और उनकी पुत्री दुरूशला के वार्तालाप से करुणरस की संसृष्टि होती है | अभिमन्युवध की सूचना प्राप्त कर उनका स्तब्ध रह जाना, दुरूशला तथा गान्धारी का क्रन्दन, धृतराष्ट्र तथा गान्धारी का अपने कुल नाश को निश्चित मानना, गान्धारी के शोकाभिभूत हृदय का चित्रण आदि प्रसंग करुण रस का संचार करता हैं |

सन्दर्भ सूचि

1. वस्तु नेता रसस्तेषांभेदकः | दश,१६१
2. विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पति: | नाण्शा, पृण२७२
3. नाण्शा, पृण२९०
4. नाण्शा, पृण२७२
5. मध्यम,श्लोक दृ ८
6. Ayyar, A.S.P. Bhasa, P.233.
7. Pusalker, A.D.-Bhasa- A Study, P.194
8. दीक्षित जगदीश. भास की भाषा सम्बन्धी तथा नाटकीय विशेषताएँ।